अव्वल नं० साकार सो निराकार बाप- राम बाप।
अव्वल नं० साकार बच्चा- कृष्ण बच्चा।।

डी.वी.डी. नं.381, वी.सी.डी. नं.2318, ऑडिओ नं.2804, प्रातः क्लास - 5.11.66

प्रातः क्लास चल रहा था- 05.11.1966। शनिवार को सातवें पेज के मध्य में बात चल रही थी कि मूल बात समझाने की है कि बाप कौन है, जिस बाप पर निश्चय करना है और उस बाप से साकार स्वर्ग का वर्सा मिलता है। वो बेहद का बाप है, बेहद का वर्सा देता होगा। हद के बाप हद का वर्सा देते हैं। हद का बाप एक जन्म का वर्सा देता है; बेहद का बाप जन्म-जन्मांतर का वर्सा देता है; परंतु बेहद के दो बाप हैं- एक है बिन्दु-2 आत्माओं का बाप ज्योतिबिंदु निराकार। आत्माएँ भी निराकार, बाप भी निराकार। निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए? (किसी ने कहा- साकार में चाहिए) क्योंकि जो आत्माओं का बाप निराकार है, उसको तो अपना साकार शरीर है ही नहीं। तो जिसको साकार शरीर ही नहीं है, वो साकार स्वर्ग की सुख-शांति का अनुभव कैसे कराएगा? धनवान बाप होगा तो धन का वर्सा देगा; करोड़पति/अरबपति बाप होगा तो करोड़/अरब का वर्सा देगा। आत्माओं का बाप सदैव निराकार है। अन्य आत्माएँ तो साकार भी बनती हैं; क्योंकि साकार शरीर धारण करती हैं, साकार शरीर से, शरीर की कर्मेन्द्रियों से सुख भोगती हैं। तो बाप भी वर्सा देने वाला कैसा चाहिए? (किसी ने कहा- साकार) परंतु जो साकार बाप है, जिससे साकार में सुख और शांति का वर्सा मिलता है, वो बाप साकार मनुष्य-सृष्टि का बाप है, मनुष्य-सृष्टि का बाप माने बीज है और ये सृष्टि जैसे अनादि है, ऐसे मनुष्य-सृष्टि का बाप भी अनादि है। उसका न आदि है, न अंत है। उसके माँ-बाप का भी कोई पता नहीं बताय सकता। वो सारी मनुष्य-सृष्टि का बाप है, इब्राहीम-बुद्ध-क्राइस्ट आदि का भी बाप है; परंतु उसका इस मनुष्य-सृष्टि में कोई बाप नहीं; क्योंकि क्राइस्ट आदि धर्मपिताएँ तो हद के बाप ही ठहरे। भल क्राइस्ट 200-250 करोड़ मनुष्यों का बाप है, 200-250 करोड़ क्रिश्चियन्स उसे अपना बाप मानते हैं; परंतु फिर भी तो हद है ना! 500-700 करोड़ का बाप तो कोई भी धर्मपिता नहीं है। इसलिए वो बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं; लेकिन कब देते हैं? तब बेहद का वर्सा देते हैं, जब नं०वार बच्चे 100 परसेण्ट आत्मिक स्थिति में स्थित होते जाते हैं।

ये आत्मिक स्थिति में स्थित होने की युक्ति कौन बताता है? आत्माओं का बाप शिव बताता है। आत्माओं का बाप सदा निराकारी है, तो वर्सा भी कौन-सा देगा? निराकारी वर्सा देता है। निराकारी वर्सा क्या है? निराकारी वर्सा है ज्ञान। वो त्रिकालदर्शी है; क्योंकि जन्म-मरण के चक्र में आता ही नहीं है। देहधारी मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में आते हैं। वो कभी भी जन्म-मरण के चक्र में न आने के कारण तीनों कालों को जानता है; इसलिए ज्ञान का वर्सा देता है। उसके पास अखूट ज्ञान का भण्डार है। कैसा अखूट? उस अखूट ज्ञान के भण्डार में से सारा ही भण्डार कोई निकाल ले, तो भी खुटता नहीं है। ऐसी कौन-सी मनुष्यात्मा है, जो अखूट ज्ञान-भण्डार धारण कर लेती है? इसीलिए त्रिनेत्री कहा जाता है। हद के दो नेत्र तो सबको होते हैं; लेकिन आत्माओं के बाप से तीसरा नेत्र वो त्रिनेत्री धारण करता है; इसलिए ज्ञान का सम्पूर्ण भण्डार प्राप्त करने के कारण आत्माओं के बाप से पूरा वर्सा लेता है। ज्ञान का पूरा वर्सा लेने के कारण उसे सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का पूरा ज्ञान हो जाता है। कब? जब आत्माओं के बाप को याद करते-2 सम्पूर्ण स्टेज को धारण करता है, बाप समान निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी बन जाता है; इसीलिए उसकी यादगार बनती है- साकार में निराकार। त्रिमूर्ति के चित्र में वो चित्र भी दिया हुआ है, जो साकार भी है और निराकार भी है। कौन है? (किसी ने कहा- शंकर) शंकर को तो हाथ-पाँव हैं, नाक, आँख, कान आदि सब इन्द्रियाँ हैं और शंकर तो याद में बैठा हुआ है। जो याद में बैठा है, वो पुरुषार्थी है या सम्पन्न है? (किसी ने कहा- पुरुषार्थी) तो उसको पुरुषार्थ कराने वाला कौन है? (किसी ने कहा- शिवबाप) आत्माओं का बाप। जो पुरुषार्थ की युक्ति बताता है कि तुम सब मनुष्यात्माएँ ज्योतिबिन्दु हो। मैं तुम्हारा बाप भी ज्योतिबिन्दु हूँ। अंतर क्या है? तुम जन्म-मरण के चक्र में आते हो और मैं जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता हूँ।

फिर ये भी कहता है- ''तुम बच्चों को भी आप समान अर्थात् निराकारी बनाने, जीते जी मरना सिखलाने आया हूँ।'' (मु.ता.17.2.68 पृ.1 आदि) तो जब नंबरवार आप समान निराकारी बनाने के लिए आता है, तो कोई 100 परसेण्ट निराकारी भी तो बनता होगा। वो कौन? जो 100 परसेण्ट निराकारी स्टेज धारण करता है, वो ही मनुष्य-सृष्टि का बाप साबित होता है, निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी। उसकी पूजा शिव के मंदिरों में यादगार दिखाई जाती है- शिवलिंग। वो शिवलिंग, लिंग है तो बड़ा रूप है, साकार है और उसका ओरिजिनल यादगार द्वापर के आदि में सोमनाथ मंदिर में मिलता था। क्या था? लाल, गोल आकार के पत्थर

में हीरा जड़ा हुआ था। वो पत्थर किसकी यादगार? (किसी ने कहा- साकार की यादगार) और उसके अंदर जो हीरा है, वो किसकी यादगार? (किसी ने कहा- निराकार की) उस निराकार का नाम? (किसी ने कहा- शिवबाप) शिव? शिवबाप तो कहते हैं- ''न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ।'' (मु.ता.22.5.71 पृ.2 मध्यांत) तुम बच्चे नंबरवार पूज्य देवता बनते हो और तुम ही पुजारी बनते हो। तो बताओ, द्वापरयुग में पहले-2 किसकी पूजा होती है? (किसी ने कहा- शिवलिंग) वो पूजा कौन करता है? (किसी ने कहा- विक्रमादित्य) हाँ, विक्रमादित्य करता है, तो कोई मनुष्य ही है ना! वो मनुष्यात्मा कौन हो सकता है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा की आत्मा) लेकिन बाबा तो कहते हैं- जो भी राजाएँ द्वापरयुग में होते हैं, वो सब पतित होते हैं। विकारी होते हैं या निर्विकारी होते हैं? (किसी ने कहा- विकारी) तो उनकी बुद्धि भी विकारी होती है। उनकी विकारी बुद्धि में ये बात किसने सिखाई कि शिवलिंग की पूजा करो, शिवलिंग का मंदिर बनाओ? कोई ने तो बताया होगा। बताओ। (किसी ने कहा- विक्रमादित्य के गुरू ने) विक्रमादित्य का जो गुरू है, वो पहला पुजारी हुआ या नहीं हुआ? (किसी ने कहा- हुआ) क्योंकि उसके दिमाग में पहले-2 आया- इस दुख की दुनिया में सुख पाने का तरीका है- शिवलिंग की उपासना करना। उसने राजा विक्रमादित्य को सिखाया भी कि शिवलिंग की पूजा करो। जिसकी बुद्धि में पहले-2 शिवलिंग की बात आई, वो कभी पूज्य ही रहा होगा ना! कब पूज्य बना? (किसी ने कहा- संगमयुग में) अपने पुरुषार्थ से पूज्य बना या आत्माओं के बाप शिव ने बनाया? (किसी ने कहा- अपने पुरुषार्थ से बना) अगर कहें- शिव ने बनाया, तो शिव सबको बनाएगा या एक बच्चे को बनाएगा? (किसी ने कहा- सबको बनाएगा) लेकिन ऐसा नहीं है, शिव तो रास्ता बताते हैं, राजयोग की युक्ति बताते हैं- अपन को ज्योतिबिन्दु आत्मा समझ, ज्योतिबिन्दु आत्मा के बाप परमपिता परमात्मा को याद करो। परमपिता शिव, जिसका कोई पिता नहीं, उस पिता को याद करो।

अब बताओ, जो परमपिता है, उसका कोई पिता नहीं। सभी मनुष्यात्माओं का बाप, उसका कोई पिता नहीं। तो उसका कोई बड़ा बच्चा होता होगा? नहीं! 500-700 करोड़ मनुष्यात्माएँ, तो बड़ा बच्चा कौन? (किसी ने कहा- शंकर) बड़ा बच्चा वो, जो शिवबाप की बताई हुई योग की युक्ति में अव्वल नंबर जाए। तो बताओ, 33 करोड़ देवताओं में से कौन-सा देवता है, जिसकी यादगार मूर्ति दिखाती है कि एकदम याद में बैठा हुआ है? शंकर ही है और शास्त्रों में भी गाया हुआ है कि सभी देवताओं के बीच में शंकर ही एक ऐसी मूर्ति है, जो निरंतर याद में रहने वाली है। जब प्रैक्टिस करते-2 अपनी राजयोग की सम्पूर्ण निरन्तर स्टेज धारण कर लेती है तो निराकारी ज्योतिबिन्दु बन जाती है। शरीर में रहते-2 निराकारी ज्योतिबिन्दु बन जाती है, ऐसी निराकारी-निर्विकारी-निरहंकारी स्टेज धारण कर लेती है। उसका प्रूफ शिव के मंदिर में दिखाया गया है, कर्म करते हुए निराकारी या संन्यासियों की तरह कर्म को छोड़ करके निराकारी? कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हुए निराकारी; लेकिन उसको सारी कर्मेन्द्रियाँ तो दिखाई नहीं जातीं। कौन-सी कर्मेन्द्रिय दिखाई जाती है? एक शिव स्वरूप के लिंग की ही पूजा होती है। वो कामेन्द्रिय कही जाती है, जिसका गायन है 'काम जीते जगतजीत'। ऐसे नहीं कहा- आँख जीते जगतजीत, नाक जीते जगतजीत, हाथ जीते जगतजीत; लेकिन कैसे जीते? कोई भी इन्द्रिय है, उस इन्द्रिय से कर्म करते हुए अगर मन दूसरी जगह लगा हुआ है, कर्मेन्द्रिय की याद में नहीं है, तो कर्मेन्द्रिय का फल नहीं निकलेगा। जैसे बाबा मिसाल देते हैं- महबूब कारखाने में अपने रास्ते पर जा रहा था, अपनी महबूबा की याद में जा रहा था। कारखाने में जाने के बाद किसी ने पूछा- आपने रास्ते में किसको देखा? कहते- मैंने किसी को नहीं देखा। अरे! क्या अंधे होकर आ रहे थे कि आँखें बंद थीं? नहीं, आँखें तो खुली हुई थीं; लेकिन मन महबूबा में था इसलिए आँखों से किसी को नहीं देखा। मन प्रधान इन्द्रिय है। दसों इन्द्रियों से प्रबल इन्द्रिय कौन-सी है? (किसी ने कहा- मन) जब तक मन सहयोग न करे, तब तक कोई भी इन्द्रिय अपना कार्य नहीं कर सकती। तो ऐसे ही कामेन्द्रिय के बारे में है। ये कामेन्द्रिय बड़ी प्रबल है। गीता (3/42) में भी कहा है- इन्द्रियाँ बड़ी प्रबल हैं, इन्द्रियों में भी मन बहुत प्रबल है, मन से भी बुद्धि बहुत प्रबल है। मनुष्य की बुद्धि, मन के मुकाबले बहुत प्रबल है और जो भी नं०वार बुद्धिमान मनुष्य हैं, उनकी बुद्धियों से भी प्रबल वो परमपिता की बुद्धि है, जो ब्रह्मा के मुख से कहता है और गीता में भी लिखा है- 'मन्मना भव'। (गीता 9/34, 18/65) 'मत्' माना मेरे, 'मना' माने मन में, 'भव' माना समा जा।

अब बताओ, जो निराकार शिव ब्रह्मा के मुख से कहता है- मेरे मन में समा जा, तो निराकार शिव ज्योतिबिन्दु को मन है? उसको संकल्प-विकल्प चलाने की ज़रूरत है? वो सोचता है या असोचता है? (किसी ने कहा- असोचता है) उसको सोच-विचार करने की दरकार ही नहीं, वो तो त्रिकालदर्शी है। तो बताओ, कौन कहता है- 'मन्मना भव'-मेरे मन में समा जा? जिस साकार मनुष्य तन में एकव्यापी होकर प्रवेश करता है, वो साकार मनुष्य तन कहता है- मेरे मन में समा जा; और उसका प्रूफ है, झाड़ के चित्र में सबसे ऊपर कौन बैठा हुआ है? शंकर। सभी आत्माएँ जा करके उसके स्वरूप में समा रही हैं; क्योंकि जब इस सृष्टि का टोटल विनाश होगा, उस समय नं०वार सभी मनुष्यात्माएँ ये बात जान जाएँगी कि किसको याद करना है। उसी को याद करना है, जिससे

हमें साकार स्वर्ग का साकार वर्सा मिलेगा। स्वर्ग साकार, स्वर्ग बनाने वाला भी साकार। वो कैसे बनाता है? स्वः+ग = 'स्व' माने आत्मा, 'ग' माने गया। माने आत्मा कहाँ गई? (किसी ने कहा- स्वस्थिति में गई) देवताएँ कैसी स्थिति में होते हैं? (किसी ने कहा- स्वस्थिति में) तो जो अव्वल नंबर स्वस्थिति में जाता है, वो ही सारी मनुष्य-सृष्टि का बीज हुआ। क्रिश्चियन्स कहते हैं- हैविनली गॉडफ़ादर माना हैविन रचने वाला फ़ादर। जो भी बाप होता है, धन कमाता है, तो बच्चे को क्या देता है? धन का वर्सा देता है। महल-माड़ियाँ-अटारियाँ बनाएगा, तो बच्चे को काहे का वर्सा देगा? महल-माड़ियों-अटारियों का वर्सा देगा।

अब शिव कर्ता है या अकर्ता है? (किसी ने कहा- अकर्ता है) शिव, जिसकी बिंदी का ही नाम 'शिव' है; शरीर तो है ही नहीं, तो वो तो अकर्ता है, स्वर्ग बनाने का भी काम नहीं करता। तो स्वर्ग बनाने का काम कौन करता है? स्वर्ग का रचयिता कौन है- साकार या निराकार? (सभी ने कहा-साकार) सृष्टि साकार है, तो सृष्टि का रचयिता भी साकार होना चाहिए; परंतु सृष्टि का रचयिता वो ही हो सकता है, जो सृष्टि के आदि-मध्य-अंत के ज्ञान को शिव से 100 परसेण्ट धारण करे। तो वो मनुष्य-सृष्टि का बाप है, जिसको शिव के मंदिरों में शिवलिंग के रूप में दिखाया गया है। वो लिंग साकार भी है और उसमें निराकार ज्योतिबिन्दु भी है; इसलिए साकारी भी है, निराकारी भी है। लिंग निराकारी कैसे है? निराकारी ऐसे है कि उसको हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान नहीं हैं। शंकर को तो हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान हैं; क्योंकि वो पुरुषार्थी है। जब तक पुरुषार्थी है तब तक उसको इन्द्रियों का भान है और जब पुरुषार्थ सम्पूर्ण हो जाता है तो इन्द्रियों का भान खत्म हो जाता है, इन्द्रियों का रस लेना खत्म हो जाता है। उसका स्वयं इन्द्रियों का रस लेना खत्म होगा, तब ही उसकी अतीन्द्रिय सुख की बात का असर दूसरों के ऊपर पड़ेगा। प्रैक्टिकल में पहले खुद ऐसा बने। कैसा? कि इन्द्रियों से कर्म करे; परंतु कर्म करते हुए भी जैसे कर्म नहीं किया। आँखें हैं लेकिन यह दुनियाँ नहीं देखतीं; कान हैं लेकिन दुनियावी बातें नहीं सुनते- ऐसी स्टेज बन जाए। कैसी स्टेज बनती है? इस दुनिया को आँखों से देखता भी है और कानों से उन दुनिया वालों की बातें सुनता भी है। सारी दुनियाँ ग्लानि करती है। किसकी? जिसमें पतित-पावन बाप मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है। धर्मपिताएँ भी ग्लानि करते हैं, उनके फॉलोअर्स भी ग्लानि करते हैं; लेकिन वो ग्लानि को सुनते हुए भी नहीं सुनता। तो जब इन्द्रियों की ऐसी स्टेज बन जाती है, तब वो स्वयं पूज्य बनता है और द्वापर में भी फिर अव्वल नंबर पूज्य व्यास बनता है। पहले उसकी बुद्धि में आता है- किसकी पूजा करनी चाहिए, बाद में दूसरों की बुद्धि में आता है। तो वो स्वयं ही साकार में पूज्य है।

अब बताओ, सोमनाथ मंदिर में जो हीरा जड़ा हुआ था, वो कौन-सी आत्मा की यादगार है? (किसी ने कहा- आत्माओं के निराकार बाप की यादगार) वो पत्थर बनता है? हीरा तो पत्थर होता है। फिर? (किसी ने कहा- साकार में निराकार है ना!) अरे! वो हीरा जो आत्मा है, वो कौन-सी आत्मा की यादगार है? (किसी ने कहा- शिवबाबा की) हीरा तो हीरो कहा जाता है, उससे ज़्यादा ज्ञान की रोशनी की चमक मारने वाला कोई होता ही नहीं। उसी का नाम 'भारत' है- 'भा' माने ज्ञान की रोशनी, 'रत' माने लगा रहने वाला; जो सदैव ज्ञान की रोशनी में लगा रहता है। संगमयुग में भी ज्ञान की रोशनी में लगा रहता है, मनन-चिंतन-मंथन में लगा रहता है और देवता बनता है तो अन्य देवताओं की तरह मस्तक में ज्योतिबिन्दु आत्मा की याद में रहता है। तो ज्योतिबिन्दु तो ज्ञान के विस्तार का सार है ना! तो वहाँ भी निराकारी स्टेज में है, ज्ञान की रोशनी में है और द्वापरयुग से जब द्वैतवादी धर्मपिताएँ आते हैं और संग के रंग से देवताओं को देह-अभिमानी बनाते हैं, उस समय भी वो आत्मा ज्ञान की रोशनी में ही रत रहती है, जिसका नाम पड़ता है 'वेदव्यास'। सबसे पहले-2 शास्त्र कौन-से हैं? 'वेद'। उन वेदों की रचना किसने की? व्यास ने रचना की। वेदों में भी 'श्रीमद्भगवद्गीता' सबसे पहला शास्त्र है। उसमें भी लिखा है- ''व्यासः प्रसादात्।'' (गीता-18/75)- व्यास के प्रसाद अर्थात् प्रसन्नता से ये गीता-ज्ञान मिला। तो देखो, सृष्टि के आदि संगम में भी वो ज्ञान के मनन-चिंतन-मंथन में रहता है, जब आत्माओं का बाप शिव इस सृष्टि में उतरता है और द्वापरयुग में भी ज्ञान के मनन-चिंतन-मंथन में रत रहता है। फिर जो वेदों की व्याख्या 'आरण्यक' निकले, जो जंगल में बैठकर लिखे गए और उन आरण्यकों की व्याख्या, शतपथ ब्राह्मण आदि निकले। उनकी भी व्याख्या 'उपनिषद्'। उन उपनिषदों की भी रचना पहले-2 रचने वाला वो ही है और फिर 'पुराण' निकले। पुराणों में सबसे जास्ती कौन-सा पुराण प्रसिद्ध है? बहुत बड़ा पुराण है- 'महाभारत'। उसके लिए भी शास्त्रों में लिखा है। किसने लिखा? (किसी ने कहा- व्यास) तो देखो, द्वापर के आदि में जो भी ऋषि-मुनि हुए, उनमें सबसे बड़ा ब्रह्मऋषि ज्ञान की रोशनी में रत रहने वाला वो हुआ। चलो, ये तो मुख से ज्ञान सुनाने की बात हुई, शास्त्र तो बाद में कागज़ पर/भोज पत्र पर लिखे गए; लेकिन जो ज्ञान है, वो प्रैक्टिकल कर्मेन्द्रियों में भी समाया हुआ होना चाहिए। तो प्रैक्टिकल कर्म करने में भी वो आत्मा सबसे आगे जाती है। इतनी आगे जाती है कि विश्व में कोई भी आक्रामक विधर्मी आत्मा उसके ऊपर विजय प्राप्त नहीं कर सकती।

ज्ञान को सत्य कहा जाता है। सत्य हारने वाला या खत्म होने वाला होता है? (किसी ने कहा-जीतने वाला होता है) सदैव रहता है, उसको कोई खत्म कर ही नहीं सकता और झूठ के पाँव नहीं होते, झूठ भाग खड़ा होता है; इसीलिए भारतवर्ष में इतने विदेशी आक्रांताएँ आए, जिन्होंने भारत में भयंकर लूट-पाट की और खून-खराबा किया, मार-काट की, वो आक्रांताएँ भी हार कर अपने-2 देश में वापस चले गए। तो कोई हराने वाला था ना! जैसे एलेक्जेण्डर के लिए बताते हैं- भारत में बड़ी सेना लेकर आया और फिर बाद में चंद्रगुप्त से मुकाबला हुआ और वापस जाना पड़ा, हार गया। ऐसे ही, ये तो द्वापर की बात हुई, कलियुग में देखो, आज से 400-500 वर्ष पूर्व अक़बर आया, सारे भारत के ऊपर राज्य किया, सभी राजाओं को जीता; लेकिन महाराणा प्रताप को जीत पाया? (किसी ने कहा- नहीं) थक गया या जीत गया? थक गया, जीत नहीं सका। ऐसे ही शिवाजी। मुसलमानों के इतने अत्याचार हो रहे थे। मुसलमानों ने लगभग सारे भारत के राजाओं को जीता; लेकिन छोटे राज्य के राजा शिवाजी को नहीं जीत सके।

कहने का मतलब ये है- चाहे साहित्य के क्षेत्र में हो, जैसे द्वापर में वाल्मीकि रामायण लिखी गई और कलियुग में तुलसीकृत रामायण लिखी गई। बाबा ने मुरली में बोला- अपने-2 शास्त्रों में अपनी महिमा कर दी है। जो भी शास्त्र बनाने वाले हुए, उन्होंने जो अपने शास्त्र लिखे, उसमें किसकी महिमा की? अपनी महिमा की। माना वाल्मीकि ने जो वाल्मीकि रामायण में राम की महिमा लिखी है, वो कौन-सी आत्मा थी? राम वाली आत्मा थी। ऐसे ही कलियुग में तुलसीदास ने राम की महिमा में 'रामायण' लिखी। तो वो रामायण बनाने वाली कौन-सी आत्मा थी? तुलसीदास। तुलसीदास कौन-सी आत्मा साबित हुई? राम की आत्मा साबित हुई। तो इससे सिद्ध होता है कि वो हर क्षेत्र में इस सृष्टि का हीरो पार्टधारी है।

हीरो पार्टधारी हर जन्म में हीरो का ही पार्ट बजाएगा या नीचा पार्ट बजाएगा? हीरो का पार्ट बजाता है। क्यों? क्योंकि सर्व आत्माओं का जो बाप शिव है, उसका बड़ा बच्चा है; इसलिए भारतीय परम्परा में जो भी राजाएँ हुए, उनकी परम्परा चली आई कि राजाओं ने अपने बड़े बच्चे को राजाई दी, वर्सा दिया। ये परम्परा कहाँ से शुरू हुई? संगम में शिवबाबा ने आकर शुरू की; इसीलिए गीता में लिखा है- ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।'' (गीता-3/23)- जितने भी मनुष्य इस सृष्टि में हैं, वो मेरे रास्ते का ही अनुगमन करते हैं। जिस रास्ते पर मैंने चल करके दिखाया, उसी रास्ते पर सब मनुष्य चलते हैं। माने सभी मनुष्यमात्र बाप बनकर अपने बड़े बच्चे को वर्सा देते हैं। तो इससे साबित हो जाता है कि स्वर्ग का वर्सा देने वाला प्रैक्टिकल बाप कौन है; प्रैक्टिकल माना शरीर की कर्मेन्द्रियों के द्वारा कर्म करके स्वर्ग स्थापन करने वाला, स्वर्ग की राजधानी स्थापन करने वाला। कौन है- शिव की आत्मा है या कोई मनुष्यात्मा है? (किसी ने कहा- शिव समान मनुष्यात्मा है) जो इस सारी मनुष्य-सृष्टि का बीज है; लेकिन वो भी तब बनता है, परम आत्मा का टाइटिल तब लेता है, जब आत्माओं के बाप शिव से पूरा ज्ञान धारण करता है, शिव बाप जो युक्ति बताते हैं- मनुष्य से देवता कैसे बनना है, उस युक्ति को जीवन में धारण करता है और नर से नारायण इसी जन्म में बनता है। कोई डॉक्टर है, वो अपने शिष्य/स्टूडेण्ट से कहे कि मैं तुम्हें डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ाता हूँ, अगले जन्म में डॉक्टर बन जाओगे। कोई इंजीनियर अपने स्टूडेण्ट से कहता है- मैं तुम्हें इंजीनियर की नॉलेज सिखाता हूँ, अगले जन्म में इंजीनियर बन जाना। तो कोई बेवकूफ स्टूडेण्ट होगा (जो ऐसी पढ़ाई पढ़ने के लिए तैयार होगा)। ये तो अंधश्रद्धा की बात हो गई कि इस जन्म में डॉक्टरी पढ़ो, इंजीनियरिंग पढ़ो, अगले जन्म में डॉक्टर/इंजीनियर बन जाना। नहीं, शिव बाप अंधश्रद्धा नहीं सिखाते हैं। शिव बाप का ज्ञान अंधश्रद्धा का ज्ञान नहीं है। श्रद्धा-विश्वास का ज्ञान तो है; लेकिन अंधश्रद्धा की बात नहीं है। यहीं पढ़ाई पढ़ो और उस पढ़ाई की प्रारब्ध- मनुष्य से देवता यहीं बनना है। जो कहते हैं कि यहाँ हम ईश्वर की पढ़ाई पढ़ते हैं और अगले जन्म में हम प्राप्ति करेंगे, तो वो पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ते, बाप को नहीं जानते, जो बेहद का स्वर्ग का वर्सा देने वाला है और आत्माओं के बाप को भी पूरी तरीके से नहीं जानते; इसलिए पूरी नॉलेज नहीं ले पाते।

तो बताया, जिस बाप को पत्थर-ठिक्कर में डाल दिया है, पहले बाप का परिचय लो। वो कौन-सा बाप है, जिसको दुनिया वालों ने पत्थर-भित्तर-ठिक्कर, कण-2 में डाल दिया? इस बात की शूटिंग कहाँ होती है कि भगवान बाप को पत्थर बुद्धियों में, ठिक्कर बुद्धियों में, भित्तर बुद्धियों में डाल दिया? (किसी ने कहा-संगमयुग में) 'भीत' माने दीवाल, जो दीवाल की तरह ज्ञान के रास्ते में अड़ कर खड़े हो जाते हैं, न खुद ज्ञान लेते हैं, न दूसरों को लेने देते हैं। ऐसे भित्तर बुद्धियों में भगवान बाप को डाल दिया है। जिस दीवाल (मस्जिद) के सामने बैठ आज भी इबादत करते देखे जाते हैं। इसी तरह हिन्दू भी पत्थर की पूजा करते हैं।

आत्माओं के बाप को सिर्फ़ 'बाप' कहा जाता है, उसका कोई दूसरा संबंध नहीं। आत्मा-2 भाई-2 और वो हमारा बाप; ग्राण्ड फ़ादर/बाबा भी नहीं। वो जब साकार में प्रवेश करता है, मुकर्रर रथ में आता है, तो सारे संबंध बनते हैं। तब वो हमारा ग्राण्ड फ़ादर/बाबा भी है, वो हमारा मनुष्य-सृष्टि में बड़ा भाई भी है। कौन? जिस मनुष्य-तन में (शिव बाप) प्रवेश करता है। बड़े भाई को

दादा कहा जाता है और आत्मा-2 भाई-2 के बाप को क्या कहा जाता है? (किसी ने कहा- बाप) तो वो है बाप और वो है दादा। बाप कौन है? आत्माओं का बाप सिर्फ बाप है, दूसरा कोई संबंध नहीं है; और दादा कौन? (किसी ने कहा- साकार) हाँ, जिस साकार मनुष्यात्मा में शिव बाप प्रवेश करते हैं, वो है हमारा बड़ा भाई मनुष्य-सृष्टि का डाडा अर्थात् ग्रेट-2 ग्राण्ड फादर। तो दोनों का जब मेल होता है तो कहा जाता है- बापदादा।

वो बाबा बोलते हैं कि पत्थर-ठिक्कर-भित्तर बुद्धियों में ठोंक करके मुझे रुलाय दिया है। ऐसे पत्थर बुद्धियों को, जिनकी बुद्धि में ज्ञान बैठता ही नहीं, क, ख, ग भी नहीं बैठता। बोलते रहते हैं- हम आत्मा को कैसे याद करें, बिंदी को कैसे याद करें? बिंदी हमें याद आती नहीं। अरे! तो ये कैसी बात हुई? ठिक्कर- मिट्टी का ढेला। मिट्टी के ढेले में एक ठोकर लगे तो क्या होता है? बिखर जाता है। ऐसे ही जो मनुष्यात्माएँ ज्ञान तो लेती हैं, ज्ञान में चलती भी हैं; लेकिन माया की एक ठोकर लगती है और बिखर जाती हैं, अनिश्चय बुद्धि हो जाती हैं। ऐसे मनुष्य-गुरुओं में भी भगवान सद्गुरु मान कर चलते हैं। दादा लेखराज ब्रह्मा का क्या हुआ? 18 जनवरी, 1969 को परीक्षा आई या नहीं आई? (किसी ने कहा- आई) क्या रिज़ल्ट हुआ? हार्ट फेल हो गया। तो आत्मा बिखर गई ना! बिखर गई तो स्थूल शरीर से भी दूर हो गई।

तो देखो, ठिक्कर बुद्धि हो गए ना! ऐसे ठिक्कर बुद्धियों की बुद्धि में, वो जिसे परमपिता कहा जाता है, जिसका कोई बाप नहीं, उस आत्माओं के बाप का, त्रिकालदर्शी का ज्ञान गहराई तक नहीं बैठता। क्यों नहीं बैठता? क्योंकि जो ज्ञान सुनते हैं, दूसरों को सुनाते भी हैं; लेकिन अंदर-2 मंथन नहीं करते हैं। ब्रह्मा की ज़िंदगी में क्या हुआ- ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन किया? ज्ञान का रस निकाला? (किसी ने कहा- नहीं) अगर हम जुगाली न करें, चबाए नहीं, तो रस बनेगा? (किसी ने कहा- नहीं बनेगा) रस ही नहीं बनेगा तो खून भी नहीं बनेगा; खून नहीं बनेगा तो ताकत नहीं आएगी। वो है शरीर का स्थूल खून और ये है आत्मा के संकल्पों का सूक्ष्म खून। जितना ईश्वरीय ज्ञान का मनन-चिंतन-मंथन करेंगे, वो हमारा अपना बन जाता है; मनन-चिंतन-मंथन नहीं करेंगे, ऐसे ही खाया हुआ निगल लिया, तो उसका रस बनेगा? (किसी ने कहा- नहीं) वो हमारा अपनी ताकत बनेगा? नहीं बनेगा। तो ऐसे ही है। बाप कहते हैं- इन पत्थर बुद्धियों ने, ठिक्कर बुद्धियों ने, भित्तर बुद्धियों ने, ब्राह्मणों की दुनियाँ में बड़े-2 कहे जाने वाले ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ हैं, ऐसे भीत/दीवाल के समान ईश्वरीय ज्ञान के रास्ते में अड़कर खड़े हो गए, न खुद समझने के लिए तैयार होते और न दूसरों को समझाने देते हैं। उनकी यादगार है कि वो दीवाल की पूजा करते हैं। मस्जिद बनाते हैं तो एक दीवाल सामने खड़ी कर देते हैं, बस उसी की पूजा करेंगे, उसी को मानेंगे। उनका कहना है- ये दादी मानेगी, तब हम मानेंगे; दादी नहीं मानेंगी, तो हम भी नहीं मानेंगे और वो दीदी-दादियाँ क्या करती हैं? न खुद सुनती हैं, न दूसरों को सुनाने देती हैं। तो ऐसे पत्थर-ठिक्कर बुद्धि, भित्तर बुद्धियों ने भगवान बाप का जो प्रैक्टिकल रूप है, उसको रुलाय दिया है। वो रोता है? आत्माओं का बाप रोता है? उसके रोने की तो बात ही नहीं। तो किसके रोने की बात है? जिसमें प्रवेश करता है, उसको रुलाय दिया है।

तो मूल बात ये है कि पहले ये बात समझाओ कि तुम्हारा बेहद का बाप है तो बेहद का वर्सा भी देगा ना! वर्सा क्या है? स्वर्ग का वर्सा, सुख का वर्सा। अनेक जन्मों का सुख का वर्सा, एक जन्म का नहीं। वो बेहद का बाप ही देता है। तो जिसके पास होगा, वो देगा या जिसके पास होगा ही नहीं, वो देगा? (किसी ने कहा- जिसके पास होगा) वो आत्माओं का बाप शांतिधाम का वासी है या सुखधाम का वासी है? (किसी ने कहा- शांतिधाम का) वो ज्ञान देकर कि मैं ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ, मैं ये देह नहीं हूँ, आत्मा गले का हार है। वो आत्मा समझ कर गले का हार डाल लो तो क्या होगा? दुखी होंगे? नहीं होंगे। देहभान आता है तो दुख आता है। तो वो आत्माओं का बाप है। आत्माओं का बाप शांतिधाम का वासी है, शांतिधाम में ले जाकर बच्चों को रखता है और सुखधाम का वासी सुखधाम में बच्चों को ले जाता है। खुद सुखधाम का वासी नहीं होगा, तो बच्चों को वर्सा देगा? नहीं दे सकता है।

तो देखो, ये पतित से पावन बनाने की बड़ी सीधी युक्ति है और विलायत वाले भी सब जानते हैं कि भारत का पुराने-ते-पुराना प्राचीन योग मशहूर है। इस्लाम धर्म, क्रिश्चियन धर्म, बौद्ध धर्म वालों से भी पुराना धर्म है। पुराने-ते-पुराना प्राचीन योग। किसका सिखलाया हुआ है? इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आदि ने नहीं सिखलाया; भगवान बाप का सिखलाया हुआ योग है। वो योग का भण्डार है।

मनुष्य-सृष्टि का बाप योग की प्रैक्टिस करके योग का भण्डार बनता है। आत्माओं का बाप शिव योग नहीं लगाता; योग की प्रैक्टिस करता है? नहीं। वो योग का भण्डार नहीं है। योग माने लगाव, लगन, प्यार। वो आत्माओं का बाप, प्यार का सागर है या ज्ञान-सूर्य है? (किसी ने कहा- ज्ञान का सागर) सागर है? सागर तो धरणी से चिपक के रहता है। सागर धरणी माता को गोद में लेकर

रहता है या नहीं रहता है? (किसी ने कहा- रहता है) तो सूर्य है या सागर है? वो सूर्य है। वो ज्ञान-सूर्य सदैव डिटैच है और सागर, धरणी से अटैच है। वो सागर, ज्ञान का सागर, सुख का सागर भी है, प्यार का सागर भी है। प्यार इन्द्रियों के द्वारा होता है; इन्द्रियों में सबसे बड़ी इन्द्रिय 'मन' के द्वारा होता है या बिना इन्द्रियों के होता है? मन के द्वारा, इन्द्रियों के द्वारा प्यार होता है। बाप भी कहते हैं- सुख लेना है, सुख देना है। इन्द्रियों के द्वारा ही सुख लेंगे-देंगे कि बिना इन्द्रियों के सुख का लेन-देन होता है? इन्द्रियों के द्वारा सुख का लेन-देन होता है। तो सुख का देना और 21 जन्मों तक सुख का देना, ये कौन दे सकता है, कौन-सी आत्मा दे सकती है- आत्माओं का बाप या आत्माओं का बाप जिसमें प्रवेश कर सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देता है? जिसमें प्रवेश करता है, उसकी बात है। प्रवेश करने मात्र से कोई सुख की दुनिया में नहीं जाता। प्रवेश किए हुए कितने साल हो गए? 80 साल हो गए। प्रवेश करने से कोई सुख की दुनिया में चला गया? नहीं। कब जाता है? जिसमें प्रवेश करता है, वो शिव बाप समान बने। कैसा बने? निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी बने। तो जब वो स्वयं बनता है, तब सुख-शांति से भरपूर दुनिया का निर्माण करता है। ऐसा संगठन तैयार करता है, जिसे राजधानी कहा जाता है। दुनिया में जितने भी देश हैं, उन देशों की जितनी भी अलग-2 राजधानियाँ हैं, उन राजधानियों में सबसे जास्ती पावरफुल राजधानी, सबसे जास्ती पावरफुल संगठन इकट्ठा करता है।

संगठन माने यूनिटी। यूनिटी काहे से बनती है? प्योरिटी से यूनिटी बनती है। तो वो प्योरिटी का जो आगार है, पवित्रता का सागर है, उसकी यादगार 'शिवलिंग' है। वो प्रैक्टिकल में एवरप्योर है। सिर्फ़ एवरप्योर-3 कहे तो कोई मानेगा? एवरप्योरिटी का कर्म करके दिखाए ना! तो वो कर्म है, जो प्रबल कर्मेन्द्रिय है; ज्ञानेन्द्रिय नहीं, प्रबल कर्मेन्द्रिय, कौन-सी? कामेन्द्रिय, जिस कामेन्द्रिय के ऊपर कोई विजय नहीं पाता, कोई काम-विकार को भस्म नहीं करता। उस एक का ही यादगार है- कामदेव को भस्म किया। तो कोई बाहर का देव था या अंदर की चीज़ है? वो अंदर की चीज़ है, उस विकार को भस्म किया, राख बना दिया, जो अनेक जन्मों तक वो कामांग और वो कामना रहती ही नहीं, 21 जन्मों के लिए मर्ज़ हो जाती है। रामायण में भी है- ''विनु वपु व्यापहि सबहि को हुइहै काम अनंग।''

तो बताया, ये राजयोग इन्द्रियों के ऊपर जीत पाने वाला है, खास कर 'इन्द्रिय जीते जगतजीत', 'काम जीते जगतजीत'। कामेन्द्रियों को जीतने वाला राजयोग किसका सिखलाया हुआ है? राजयोग, ज्ञान की बात नहीं बताई। ज्ञान कौन सिखलाता है? जो जन्म-मरण के चक्र से न्यारा और त्रिकालदर्शी है; और योग कौन सिखलाता है? जो योग/लगाव लगाने में 500 करोड़ के मुकाबले सबसे आगे जाए। और-2 मनुष्यात्माएँ जीवन में लगाव लगाती हैं; पुरुष है तो स्त्री से लगाव लगाता है, स्त्री है तो पुरुष से लगाव लगाती है। एक पुरुष, जैसे निज़ाम बादशाह 500 स्त्रियों से लगाव लगाता है। राजाओं ने, भारत के राजाओं ने सैकड़ों रानियाँ रखीं, उनसे लगाव लगाया; लेकिन प्रवृत्तिमार्ग के पक्के हो करके रहे या ठोकर मारकर निकाल दिया? कैसा योग लगाया? जो भी मनुष्यमात्र हैं, उन्होंने जिनसे भी आपस में योग लगाया, स्त्री-पुरुष ने एक-दूसरे को धक्का मारा या नहीं मारा? (किसी ने कहा-मारा) और भगवान ऐसा प्रैक्टिकल जीवन में प्रवृत्तिमार्ग अपनाता है कि 16,000 कन्याओं-माताओं के साथ ऐसा अपने में बुद्धियोग लपेटता है कि उनमें से किसी को भी धक्का देकर बाहर नहीं निकालता है, सबके साथ निभाता है। तो प्रवृत्तिमार्ग का पक्का हुआ या कच्चा हुआ? (किसी ने कहा- पक्का) वो है प्रवृत्तिमार्ग का पक्का, बाकी सब प्रवृत्तिमार्ग के कच्चे हैं। 'प्र' माने प्रकृष्ट और 'वृत्ति' माने गोला। इसलिए शिव के मंदिर में शिवलिंग जो रखा जाता वहाँ गोलाकार अरघा है और उसमें शिवलिंग रखा हुआ है। वो प्रवृत्ति है, वो दूरबाज-खुशबाज निवृत्ति वाला संन्यासी नहीं है। प्रवृत्तिमार्ग बड़ा या संन्यास मार्ग बड़ा? (किसी ने कहा- प्रवृत्तिमार्ग) ज़्यादा सुख किसमें है? प्रवृत्तिमार्ग में ज़्यादा सुख है; क्योंकि भगवान ने पाण्डवों को प्रवृत्ति का रास्ता दिखाया; निवृत्ति का रास्ता नहीं सिखाया।

तो बताया कि वो योग किसका सिखाया हुआ है? भगवान का। धन वाले धनवान का नहीं; क्या नाम दिया? भगवान। 'भग' कहा जाता है स्त्री के अंग को। भगवान है; वो कोई धनवान नहीं है। वो भगवान क्या सिखाता है? पक्का प्रवृत्तिमार्ग में रहना सिखाता है। अभी उस भगवान को कोई जानते ही नहीं। ऐसी व्यभिचारी दुनिया बन गई है- दृष्टि से, वृत्ति से, वाचा से। वाचा से भी व्यभिचारी बनते हैं, रज-2 के उन्हीं से बातें करेंगे जिससे लगाव लगा होगा; औरों से बात नहीं करेंगे। दिल की बातें किसे बतावेंगे? जिससे दिल लगा होगा, उस दिलावर को बतावेंगे।

तो देखो, जो राजयोग सिखाने वाला भगवान है, उसको तो कोई भी नहीं जानते, कृष्ण को जान लिया। किसको जाना? (किसी ने कहा- कृष्ण को) जो भगवान का बच्चा बनता है। कृष्ण का बच्चा रूप ही पूजा जाता है। सतयुग में पहला पत्ता, 500-700 करोड़ पत्तों का बड़ा भाई कौन? 16 कला संपूर्ण कृष्ण। तो उसको तो मनुष्यों ने मान लिया- भगवान; लेकिन 16 कला सम्पूर्ण

बनाने वाले को कोई नहीं जानता। कृष्ण बच्चा है ना, जिसकी पूजा होती है या बड़े रूप की पूजा होती है? बच्चे की पूजा होती है। इसका मतलब है वो बच्चाबुद्धि है, राज़ की बातों को समझने वाला नहीं है। उस बच्चाबुद्धि कृष्ण को पहचान लिया, भगवान मान लिया; लेकिन वास्तव में जो बच्चाबुद्धि है, वो राजयोग कैसे सिखाएगा? स्त्री-पुरुष बचपन में राजयोग सीख सकते हैं क्या? स्त्री का पुरुष से लगाव/अटैचमेण्ट होता है, पुरुष का स्त्री से अटैचमेण्ट होता है। ज़िंदगी में ऐसा गहरा अटैचमेण्ट होता है कि जब मृत्यु का टाइम आता है तो स्त्री को वो पुरुष अंग याद आता है, तो पुरुष का जन्म मिलता है; पुरुष को स्त्री का अंग याद आता है, तो स्त्री का जन्म मिल जाता है। तो देखो, ये लगाव का इतना भारी प्रभाव है। जीवनभर जिसे जास्ती याद किया होगा, वो अंत समय में याद ज़रूर आएगा। तो देखो, ये देह के संबंध की बात हो गई।

अब भगवान बाप आत्मा बनाने के लिए आया हुआ है, तो आत्मा बनाने के लिए क्या करता है? क्या करना सिखाता है? यही सिखाता है कि देह धारण करते हुए, देह में रहते हुए ऐसी प्रैक्टिस करो कि अभी-2 साकारी, साकारी इन्द्रियों से कर्म कर रहे हैं; अभी-2 एक सेकेण्ड में निराकारी, बिन्दु बन जाओ, देह, देह की कर्मेन्द्रियों से कोई लगाव नहीं, कर्मेन्द्रियों का सुख एक क्षण भी न खींचे; अभी-2 आकारी बन जाओ, 'आकारी' माने मनन-चिंतन-मंथन में मस्त हो जाओ। तो बाप तो हमको ऐसा सिखाते हैं- घड़ी में साकारी बनो, घड़ी में निराकारी बनो, घड़ी में आकारी बनो। ''सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-2 आकारी, अभी-2 निराकारी। साकार में रहते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकें। ... इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े, सिर्फ अमृतवेले नहीं। बीच-2 में यह अभ्यास करो।'' (अ.वा.10.12.92 पृ.117 मध्य) अभी-2 मनन-चिंतन करने वाले आकारी, अभी-2 कर्मेन्द्रियों से कर्म करने वाले साकारी और अभी-2 निराकारी- मैं आत्मा ज्योतिबिन्दु हूँ, देह का कोई कनेक्शन नहीं, देह और देह की इन्द्रियाँ याद ही न आएँ। तो ये योग भगवान बाप सिखाते हैं।

ये सभी जो ऋषि-मुनि, साधु-संत जाते हैं ना, विलायत में जाते हैं, वहाँ भी कृष्ण की बात करते हैं। कहते हैं- गीता-ज्ञान कृष्ण ने दिया। अब वो खुद ही नहीं जानते कि कृष्ण तो 16 कला सम्पूर्ण है। उसको 16 कला सम्पूर्ण किसने बनाया? 16 कला सम्पूर्ण तो देवताएँ होते हैं, भगवान नहीं। कलाओं में बँधे हुए देवात्माएँ हैं या भगवान कलाओं में बँधता है? सूर्य कलाओं में बँधता है या चंद्रमा कलाओं में बँधता है? (किसी ने कहा- चंद्रमा) तो देखो, जो 16 कला सम्पूर्ण बनाने वाला है, खुद कलाओं के बँधन में नहीं है, कलाओं से भी ऊपर है, वो कौन-से युग में प्रत्यक्ष होता है? संगम में प्रत्यक्ष होता है। संगम में 16 कलाओं से भी ऊपर जो स्वयं बनता है, वो 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण को प्रैक्टिकल जन्म देता है, रचना रचता है; इसलिए जो कलाओं में बँधा हुआ है, वो कृष्ण वाली आत्मा दिन-प्रतिदिन, जन्म-जन्मांतर नीचे गिरती है या ऊपर उठती है? (किसी ने कहा- नीचे गिरती है) क्योंकि कलाओं में बँधी हुई है और जिसको गाया जाता है- कलातीत-कल्याण-कल्पांतकारी, कलाओं से भी परे कलातीत। कैसा सुख देता है? अरे, गोपियों का कैसा सुख गाया हुआ है? अतीन्द्रिय सुख- इन्द्रियों से भी परे का सुख। चाहे कर्मेन्द्रियाँ हों, चाहे ज्ञानेन्द्रियाँ हों, उन इन्द्रियों से भी ऊँचा सुख, जो संगमयुग में ही भगवान के द्वारा प्राप्त होता है, वो कलातीत सुख भगवान ही देता है।

तो देखो, कहाँ कृष्ण कलाओं में बँधा हुआ और कहाँ कलाओं से परे भगवान- कितना वास्ट अंतर है! अभी तुम ही सिर्फ़ हो, जो कहते हो- कृष्ण भगवानुवाच नहीं है। तुम बच्चे ही हो, जो कहते हो- कृष्ण उर्फ ब्रह्मा की आत्मा भगवान नहीं है। कौन है भगवान? (किसी ने कहा- शिव-शंकर भोलेनाथ) वो ही भगवान है। उस शंकर का नाम शिव के साथ क्यों जोड़ा जाता है? एक ही आत्मा है, जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। 33 करोड़ देवताओं में भी कोई नहीं है, 500-700 करोड़ मनुष्यों में भी कोई आत्मा नहीं है, जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाए। किसका जोड़ा जाता है? एक शंकर का नाम जोड़ा जाता है और शंकर भी वो नहीं जो पुरुषार्थी है; वो शंकर, जो सम्पन्न स्टेज धारण करता है। कैसी सम्पन्न स्टेज? मन रूपी घोड़ा कहो, बैल कहो, बैल अर्थात् ब्रह्मा कहो, उसके ऊपर सवार हो जाता है, तब कहा जाता है- मन को जीत लिया। किसने जीता? मन रूपी बैल या घोड़े के ऊपर कौन सवार हो गया? शंकर सवार हो गया। न कि शिव सवार हो गया? (किसी ने कहा- शंकर) इसीलिए बैल के कंधे पर शिवलिंग स्वरूप दिखाते हैं। वो शिवलिंग जो है, वो किसकी यादगार है? बैल पर सवार होने की यादगार है? शिव, बैल जानवर में प्रवेश करता है? शिव उस जानवर में आता है, जो मनन-चिंतन-मंथन कर ही नहीं सकता? जानवर में आता है या मनुष्य में आता है? (किसी ने कहा- मनुष्य में)

तो कोई एक मनुष्य है मनुष्य-सृष्टि का बीज, जिसको भारतीय शास्त्रों में 'शंकर' नाम दिया हुआ है। शंकर नाम क्यों दिया? तीन आत्माओं का संकरण है। कौन-कौन-सी तीन आत्माएँ? (किसी ने कहा- ब्रह्मा, विष्णु और शंकर/राम) शिव, जिसको कहते हैं त्रिनेत्री, सदाशिव। खड़ा हुआ नेत्र या पड़ा हुआ नेत्र? (किसी ने कहा- खड़ा हुआ नेत्र) सदैव ज्ञान-युक्त; अज्ञान की नींद कभी सोता

ही नहीं। शिवबाबा क्या कहते हैं? मैं जब आता हूँ तो मैं रात-दिन सेवा करता हूँ। सोता है? वो नहीं सोता है। तो आप समान जिसे बनाएगा, वो गुडाकेश अर्जुन भी निद्राजीत बनेगा या नहीं बनेगा? वो भी निद्राजीत, बाप समान सदा जागती ज्योति शिव समान बन जाता है; इसलिए बैल जानवर के ऊपर सवार शिवलिंग-जैसा क्या होता है? गुम्मड़। बैल के ऊपर शिवलिंग-जैसा गुम्मड़ होता है ना! (किसी ने कहा- हाँ!) वो कौन-सी आत्मा की यादगार? (किसी ने कहा- ब्रह्मा) ब्रह्मा तो खुद ही बैल है; उसके कंधे पर कौन सवार है- निराकार शिव ज्योतिबिन्दु? वो शिव समान संपन्न पुरुषार्थी मनुष्य जानवर पर सवार होता है। वो निराकार शिव जानवर पर सवार होकर प्रत्यक्ष नहीं होता; वो तो मनुष्य में ही प्रत्यक्ष होता है। तो वो मनुष्यात्मा कौन है, जो बैल के ऊपर गुम्मड़ के रूप में, शिवलिंग के रूप में दिखाया जाता है? (किसी ने कहा- शंकर) और शंकर पर कौन सवार होता है? (किसी ने कहा- शिव) इसीलिए भक्तिमार्ग में निराकार शिव ज्योतिबिन्दु और शंकर की आत्मा, जो साकार शरीर का नाम है, दोनों को मिला कर एक साकार-निराकार का मेल शिवबाबा बताय दिया है। जैसा शिव, वैसा शंकर रूप धारण कर लेता है, तो शिवशंकर कहा जाता है; लेकिन पहला नाम किसका? शिव का नाम पहला, शंकर का नाम बाद में। आज भी दुनिया में यह परम्परा चली आ रही है, बाप का नाम देते हैं- सोहनलाल एण्ड सन्स कम्पनी। बाप का नाम पहले और बच्चों का नाम बाद में। फ़र्म का नाम, दुकान का नाम रखते हैं, तो ऐसे ही रखते हैं। तो ये अविनाशी परम्पराएँ कहाँ से शुरू हुई? शिव जब आते हैं, तो ये परम्पराएँ शुरू करते हैं।

तो देखो, अभी तुम हो, जो जानते हो कि कृष्ण भगवानुवाच नहीं है, शिव भगवानुवाच है। कौन उवाच करता है? शिव उवाच करता है। शिव तो बिंदी है, उसको तो शरीर और इन्द्रियाँ हैं ही नहीं, तो उवाच कैसे करेगा? (किसी ने कुछ कहा-...) अरे, आत्मा निराकार है, शरीर धारण न करे तो आत्मा कोई कर्म करेगी? नहीं करेगी। ऐसे ही आत्माओं का बाप भी निराकार शिव है, वो जब तक शरीर रूपी रथ धारण न करे, तब तक कोई भी ज्ञान सुनाय ही नहीं सकता।

तो ऊँचे-ते-ऊँचा वो भगवंत है, जो भगवंत क्या करता है, जिस ऊँचे-ते-ऊँचे को सारी दुनियाँ याद करती है? अब बताओ, सारी दुनियाँ की मनुष्यात्माएँ साकार को याद कर पाएँगी या निराकार बिन्दु को याद कर पाएँगी? साकार को याद करना सहज होता है और निराकार बिंदु को याद करना कठिन होता है। तो सारी दुनिया के मनुष्यमात्र उस साकार को पहचानेंगे, जिस साकार के द्वारा ये बात बताई जाती है- 'मन्मना भव', मेरे मन में समा जा। उसके मन में क्या समाया हुआ है, जो कहता है- मेरे मन में समा जा? उसके मन में बिन्दु समाया हुआ है। तो उस बिन्दु में तू भी समा जा। बिन्दु में समा जाएगा तो निराकारी आत्मा बनना पड़े या नहीं बनना पड़े? (सभी ने कहा- बनना पड़े) देह का भान छोड़ना पड़े या नहीं छोड़ना पड़े? (सभी ने कहा- छोड़ना पड़े) और यदि देह का भान पुरुषार्थ करके, अभ्यास करके नहीं छोड़ता है, तो देह के कर्मभोग से छोड़ना पड़ेगा, बीमारी-धीमारी से छोड़ना पड़ेगा। उससे भी पूरा नहीं होता है तो धर्मराज के डण्डों से, देह का जो भान है वो छाँट दिया जाएगा। आत्मा का जो छिलका देहभान है, वो सारा उतर जाएगा।

बीज आत्मा है ना! (किसी ने कहा- हाँ!) तो कोई बीज में, कितने भी मोटे छिलके वाला हो, उसमें लगातार डण्डे मारे जाएँगे तो क्या छिलका उतरेगा नहीं? (किसी ने कहा- उतर जाएगा) तो ये धर्मराज का डण्डा, दुनिया के आठ को छोड़कर जो भी मनुष्यमात्र हैं, सबके देहभान रूपी छिलके को उतार देता है। वो धर्मराज/धर्म का राजा कौन है? (किसी ने कहा- ब्रह्मा) धर्म माना धारणा। कहेंगे, ब्रह्मा ने तो शरीर छोड़ दिया, वो तो भूत-प्रेत-जैसा बन गया। भारत में भूत-प्रेतों की पूजा होती है कि साकार देवताओं की पूजा होती है? (किसी ने कहा- साकार देवताओं की) विदेशी लोग भूत-प्रेतों को मानते हैं, फ़रिश्तों को मानते हैं; वो देवताओं को नहीं मानते। तो देखो, ब्रह्मा की गोद में पलने वाले जो भी दूसरे-2 धर्म की कन्वर्टिड आत्माएँ हैं, सब धर्मों से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्माएँ, वो ब्राह्मण बन करके ब्रह्मा की गोद में खेली हैं, उन्हें कुख माने गोद का नशा है, ब्रह्मा की देह का नशा है; लेकिन ब्रह्मा के मुख से जो भगवान शिव की वाणी निकली है, उस वाणी का मज़ा, नशा नहीं चढ़ता है। तो जिनको मुख से सुनाई हुई भगवान की वाणी का नशा चढ़ता है, वो मुखवंशावली ब्राह्मण हैं और जिनको गोद का नशा चढ़ता है, वो कुखवंशावली ब्राह्मण हैं। कोख नीचे है और मुख ऊपर है, तो ऊँचे कौन हुए? (किसी ने कहा- मुखवंशावली) और कुखवंशावली? (किसी ने कहा- नीचे) इसीलिए जो मुखवंशावली हैं, उनकी यादगार है- रुद्राक्ष। रुद्राक्ष के मणके देखे हैं? उसमें मुख बने हुए होते हैं। वो रुद्राक्ष के मणके मुख लेने की यादगार हैं- कोई में एक मुख, वो किसी को बहुत मुश्किल से मिलता है; कोई में 2, कोई में 4, कोई में 10, कोई में 14, अनेक मुखों वाले भी हैं। माने एक मुख से बात करते नहीं हैं, अनेक मुखों-जैसी बातें करते हैं। कोई दो-2 बातें बोलता है तो कहते हैं- दोमुँहा है, दो मुँह से बात करता है। तो एक बात करने वाला एक मुख अच्छा या अनेक बातें बनाने वाला अच्छा? एक बात करने वाला सच्चा, बाकी सब झूठे। तो एक है सद्गुरु। सिक्ख लोग मानते हैं- एक सद्गुरु निराकार। सत् गुरु एक ही है, बाकी सब

गुरु झूठे हैं। तो एक जो सद्गुरु है, वो सद्गुरु दलाल के रूप में मिलता है, साकार रूप में मिलता है या निराकार, आकार होता है? सुंदर मेला कर दिया जब सद्गुरु मिला दलाल। तो कौन-सा मेला प्रसिद्ध है? (किसी ने कहा- गंगा-सागर) हाँ, और मेले बार-2, गंगा-सागर एक बार। वो गंगा-सागर में ज्ञान-गंगाओं को धारण करने वाला सागर है। पहले नदियाँ टकराती हैं। गंगा-सागर मेले में जो गए होंगे, वो जानते होंगे कि नदियाँ जो उछाल मार कर, पानी का बड़ा भण्डार लेकर सागर से टकराती हैं और सागर भी ऊँची-2 ज्ञान-लहरों से टकराता है। तो दोनों के टकराने से बड़ी ऊँची-2 दीवाल-जैसी खड़ी हो जाती है, विघ्न की दीवाल खड़ी हो जाती है, लोग समझ नहीं पाते हैं- सच्चाई क्या है। फिर टकराते-2 नदियाँ, सागर में समा जाती हैं। तो वो गंगा-सागर मेला प्रसिद्ध है। वहाँ मेल होता है- सागर और नदियों का मेल होता है। नदियों में तालाब मिल जाते हैं, पोखरे मिल जाते हैं, झीलें मिल जाती हैं; और नदियाँ किससे मिलती हैं? आखरीन सागर से ही मिलती हैं। पहले तो अल्लाहबाद-हरिद्वार आदि में सिर्फ नदियों के मिलन-मेलों में मैला ही गिरता है; क्योंकि वहाँ पतित-पावन ज्ञान-सागर होता ही नहीं।

ये अभी संगमयुग की प्रैक्टिकल बातें हैं; इसलिए वो ज्ञान-सागर ही पतित-पावन है; नदियाँ पतित-पावनी नहीं हैं। क्यों? क्योंकि वो चैतन्य ज्ञान-सागर ही है जहाँ से मनन-चिंतन-मंथन करके शास्त्र प्रसिद्ध ज्ञान-अमृत निकाला जाता है, मक्खन निकलता है, सार निकलता है। नदियाँ तो पानी की हैं, पानी को बिलोने से मक्खन नहीं निकलता है। तो बाबा ने बताया कि ये नदियाँ पानी की हैं। भले वो ब्रह्मपुत्रा ही क्यों न हो, ब्रह्मा से पैदा होने वाली ब्रह्म-पुत्री ही क्यों न हो, लक्ष्मी ही क्यों न हो, वो भी मनन-चिंतन-मंथन नहीं करती, मनन-चिंतन-मंथन करके ईश्वर के ज्ञान को अपना नहीं बनाती। कौन बनाता है? चैतन्य ज्ञान-सागर है, जो अनेक शास्त्रों में प्रसिद्ध है, कौन-सा मंथन हुआ? (किसी ने कहा- सागर-मंथन) वो चैतन्य ज्ञान-सागर है, जिसके मंथन की बात है। उस मंथन में देवताएँ भी भाग लेते हैं और असुर भी भाग लेते हैं। देवताएँ क्या लेते हैं? अमृत लेते हैं, अमृत-कलश; और असुर क्या लेते हैं? जो असुर हैं, वो शराब का घड़ा लेते हैं, वारुणी लेते हैं, नर्तकी लेते हैं।

तो देखो, ये अंतर है, जो अंतर तुम जानते हो। तुम कहेंगे- उसके सेकिण्ड फ्लोर, थर्ड फ्लोर। तीन फ्लोर हैं। किसके? ऊपर वाला जो आत्माओं का बाप है, वो सुखधाम का मालिक है? (किसी ने कहा- नहीं) दुखधाम का मालिक है? (किसी ने कहा- नहीं) वो सिर्फ़ शांतिधाम का मालिक है और तुम त्रिलोकीनाथ हो। तुम क्या बनते हो? नंबरवार त्रिलोकीनाथ। तुम शांतिधाम के भी मालिक हो, सुखधाम के भी मालिक हो और तुम दुखधाम के भी (सभी ने कहा- मालिक)। ''त्रिलोकीनाथ तुम इस समय (संगम में) हो; क्योंकि तुम तीनों लोकों के ज्ञान को जानते हो। साक्षात्कार करते हो। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन बच्चों की बुद्धि में पूरी पहचान है। (साकार-निराकार का मेल) बाबा त्रिलोकीनाथ तीनों कालों को जानने वाला है। हमको यह नॉलेज देते हैं तो हम भी मास्टर त्रिलोकीनाथ ठहरे।'' (मु.ता.29.1.72 पृ.2 मध्य) ये तीन फ्लोर हैं। मंज़िल होती है ना! ऐसे ही ये तीन मंज़िलें हैं। ये तीन मंज़िलों वाली सृष्टि यहाँ है। वो तो बाप ने समझाया ना बच्ची- ये सूक्ष्मवतन में पीछे जाते हैं। कौन पीछे जाते हैं? सभी मनुष्यात्माएँ, जो महामृत्यु में शरीर छोड़ती हैं, वो पहले सूक्ष्मवतन में जाकर इकट्ठी हो जाती हैं। क्यों? क्योंकि बड़े-2 एक्सीडेण्ट होते हैं, भूकम्प होते हैं, उस भूकंप के एक्सीडेण्ट में ढेर-के-ढेर मनुष्य अचानक मरते हैं, तो भूत-प्रेत बनेंगे या नहीं बनेंगे? (किसी ने कहा- बनेंगे) अचानक मौत वालों को भूत-प्रेत बनना पड़ता है। वो भूत-प्रेत वाली आत्माएँ, आकारी आत्माएँ सूक्ष्मवतन में जाकर ठहरती हैं, और पीछे कौन जाता है? 'ये' इशारा दिया। 'ये सूक्ष्मवतन में पीछे जाते हैं'। जब 500-700 करोड़ मनुष्यात्माएँ सब जा करके सूक्ष्मवतन में ठहरती हैं, तब अंत में सभी मनुष्यात्माओं का बाप पीछे से जाता है।

जब यहाँ से जाते हैं, तो चलो सूक्ष्मवतन में ही ये बैठ करके ट्रिब्यूनल बनती होगी। ट्रिब्यूनल, जो हरेक मनुष्यात्मा का फैसला करती है कि किसने कितने पाप किए, किसने कितने पुण्य किए, फैसला दे करके उसका हिसाब-किताब चुक्तू करती है, ट्रिब्यूनल बैठती है। तो कौन-कौन-सी ट्रिब्यूनल है? ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। ब्रह्मा की नीची पुरी, उससे ऊपर विष्णु की पुरी और उससे ऊपर शंकरपुरी। इस ट्रिब्यूनल में मनुष्यात्माएँ सज़ा खाती हैं, 'फलाना करती हैं'। सज़ाओं की भयंकरता नहीं बताई, सिर्फ़ फलाना कहकर छोड़ दिया; नहीं तो बच्चे डर जाएँगे। ये साक्षात्कार की बात समझो।

तो चलो, हम कहेंगे- अच्छा, जब ये खलास होते हैं। कौन? जब ये ट्रिब्यूनल में बैठने वाले, ये भी सूक्ष्मवतन से अलग होते हैं, खलास होते हैं; तो सूक्ष्मवतन में भी तो कुछ रहता होगा ना! तीन पुरियाँ हैं सूक्ष्मवतन की- ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी और शंकरपुरी। ब्रह्मापुरी साकार दुनिया के नज़दीक और शंकरपुरी निराकारी दुनिया के नज़दीक और विष्णुपुरी दोनों के बीच में। तो बताओ, सूक्ष्मवतन में, जब सब आत्माएँ अपने-2 शरीर छोड़ करके मूलवतन में जाती हैं तो सूक्ष्मवतन में कौन ठहरता होगा? कुछ तो होता होगा ना सूक्ष्मवतन में? तो सूक्ष्मवतन में ट्रिब्यूनल बैठती है। सज़ाएँ खा करके पीछे प्योर हो करके चले जाते हैं ऊपर में। वो

भी तो सूक्ष्मवतन है ना, वहाँ भी तो कुछ काम होता होगा ना! कहाँ? सूक्ष्मवतन की ऊपरी पुरी में, शंकरपुरी में। चलो, ये सूक्ष्मवतन में ट्रिब्यूनल बैठती है। ये सब सज़ाएँ खा करके, साफ़ हो करके चले जाते हैं, देह-अभिमान का किचड़ा साफ़ हो करके सभी आत्माएँ चली जाती हैं। जाना तो सबको है ना! झुंड जाना है, बहुत ही झुंड-के-झुंड नंबरवार (सारे ही धर्मावलम्बी)। आया है तो सब बच्चों को ले जाएगा ना! जब तलक सब बच्चे न ले जाए जाएँ, तब तलक स्वर्ग कैसे बनेगा? सारी मनुष्यात्माएँ इस पाँच तत्वों की सृष्टि को छोड़कर कहाँ चली जाती हैं? आत्मलोक में चली जाती हैं। सबको जाना है, झुंड-के-झुंड जाना है। आया है तो सब बच्चों को ले जाएगा। जब तक सब न जाएँ, तो स्वर्ग कैसे बनेगा? सबको ले जाता है। ऊपर आत्मा की ऊँची स्टेज में ले जा करके स्वर्ग बनाता है? (किसी ने कुछ कहा-...) तो फिर स्वर्ग कौन बनाता है? (किसी ने कहा-मनुष्य-सृष्टि का बाप) हाँ, वो जो मूलवतन के सबसे नज़दीक है, उसको मूलवतन में, मूल स्टेज में, आत्मिक स्थिति में रहना सहज हो जाएगा कि दूसरी आत्माओं को सहज होगा? (किसी ने कुछ कहा-...) तो बताया, ये संगमयुग का ये टाइम लेते हैं, तो स्वर्ग और नर्क दोनों का शूटिंग काल संगम हो जाता है।

बाबा समझते हैं इस संगम को कम-से-कम 100 वर्ष तो ज़रूर देना चाहिए। पुरुषोत्तम युग, ये युग को कम-से-कम 100 वर्ष तो देना ही चाहिए। क्या नाम दिया युग का? पुरुषोत्तम युग। कब से शुरू होता है? (किसी ने कहा- 2018 से) 2018 से! अब तक संगमयुग था ही नहीं? कलियुग और सतयुग का संगम अभी तक नहीं था? (किसी ने कुछ कहा-...) पुरुषोत्तम संगमयुग। 'पुरुष' माने शरीर रूपी पुर/पुरी और उसमें 'श', शयन करने वाला। ऐसी आत्मा, जो शरीर रूपी पुरी में आराम से विष्णु के मुआफ़िक शयन करे। शरीर रूपी पुरी में विष्णु आराम से शयन करता है ना! काहे के ऊपर शयन करता है? महाकामी सर्प-सर्पिणियों की शैय्या के ऊपर शयन करता है। नहीं तो कोई की रजाई में साँप घुस जाए और उसे पता चले- साँप आ गया, तो उठकर रजाई-वजाई छोड़कर भाग खड़ा होगा, चाहे कितनी भी ठंड हो और वो इतनी सर्प-सर्पिणियों के बीच में आराम से शयन करता रहता है, ऐसी आत्मिक स्टेज प्रैक्टिकल में रहती है।

तो वो बताया- पुरुषोत्तम, पुरुषों में उत्तम पार्टधारी- विष्णु। विष्णु की तो चार भुजाएँ हैं- कोई लेफ्ट, कोई राइट; कोई ऊपर, कोई नीचे। भुजाएँ माने मददगार। मददगार आत्माओं को ही 'भुजा' कहा जाता है। तो भुजाएँ श्रेष्ठ हैं या भुजाओं को चलाने वाला कोई ऊपर भी है, वो श्रेष्ठ है? (किसी ने कहा- भुजाओं को चलाने वाला) तो जो चलाने वाला ऊपर है, उसकी बात हो रही है। उस पुरुषोत्तम युग को कम-से-कम 100 साल दें। तो वो विष्णु-रूप, लक्ष्मी-नारायण का कम्बाइण्ड रूप कब से प्रत्यक्ष होता है? मुरली में बताया- ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 1966 की वाणी है) (मु०4.3.70 पृ०3 मध्य में रिवाइज़ हुई) (किसी ने कहा-1976) तो उससे पहले क्या किसी को पता था कि पुरुषों में उत्तम बनने वाली आत्मा कौन? नहीं पता था ना! तो कब से पता चला? 1976 से। तो 1976 से पुरुषोत्तम संगमयुग के 100 साल और जोड़ो। कम-से-कम इतने साल तो ज़रूर लगेंगे, जो नर्क की दुनिया खलास हो और स्वर्ग की दुनिया स्थापन हो। पुरुषोत्तम युग है, जो ये कचरपट्टी है, सब साफ़ हो करके; 500-700 करोड़ क्या हैं? 8 को छोड़ करके सब क्या हैं? कचरपट्टी और वो 8 भी माया के गाल में चले जाते हैं। तो कौन बचा? (किसी ने कहा- एक ही) एक बचा, जिसके लिए गायन है-'त्वमेव माता च पिता त्वमेव'। कब जन्म हुआ? (किसी ने कहा- 1976) 1976 में उन परमपदधारी आत्माओं को अंदर-2 ये प्रत्यक्षता हो गई कि हमारा पार्ट लक्ष्मी और नारायण का है। ये प्रत्यक्षता रूपी जन्म हुआ। ये प्रत्यक्षता रूपी जन्म जब से हुआ, तब से सच्चा-2 पुरुषों में उत्तम पार्टधारी, पुरुषोत्तम युग शुरू हुआ; उससे पहले किसी को पता ही नहीं था- पुरुषोत्तम कौन है। जब पता ही नहीं था तो पुरुषोत्तम युग कहेंगे? सामान्य युग कहेंगे- संगमयुग; लेकिन पुरुषोत्तम युग नहीं कहेंगे। तो 1976 से लेकर 100 साल और जोड़ दो। कितना आया? 2076। अभी तक क्या समझते थे? 1936 से ले करके 2036 तक समझते थे; लेकिन 1936 में तो पुरुषोत्तम प्रत्यक्ष ही नहीं हुआ। हाँ! ब्रह्मा वाली आत्मा ने, कृष्ण वाली आत्मा ने समझ लिया कि मैं 16 कला सम्पूर्ण नारायण बनूँगा, मैं श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पार्टधारी, हीरो पार्टधारी हूँ, मैं गीता-ज्ञान का रचयिता हूँ, गीता-पति भगवान हूँ; लेकिन झूठा समझा या सच्चा समझा? (किसी ने कहा- झूठा) वास्तव में 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण को जन्म देने वाला रचयिता बाप है नई सृष्टि का रचयिता हैविनली गॉडफ़ादर। वो हैविनली गॉडफ़ादर वहाँ पुरुषोत्तम युग 1976 से जब प्रत्यक्ष होता है, तब से पुरुषोत्तम संगमयुग 100 साल का गाया हुआ है। तब तक ये कचरपट्टी सब साफ़ होकर जो बचते हैं, दोनों बचते हैं। कौन-2? लक्ष्मी और नारायण, जिनका प्रत्यक्षता रूपी जन्म 1976 में हुआ, वो 100 साल के बाद भी बचेंगे। सूक्ष्मवतन की ऊँचे-ते-ऊँची स्टेज में वो बचेंगे और सब कहाँ चले जाएँगे? मूलवतन में वापस चले जाएँगे। सब कचरपट्टी साफ़ हो जाएगी, तो जो दोनों बचते हैं, उनमें से भी जो वो है, कौन? ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत? (किसी ने कहा- शिव) शिव! ये दो कौन

बचते हैं? (किसी ने कहा- लक्ष्मी-नारायण) उन दोनों में भी जो ऊँचे-ते-ऊँचा भगवंत है, उनमें से भी जो वो है, वो सब चला जावे, क्लीयर हो जावे, सभी क्लीयर हो जावे और फिर उनको कहेंगे- नई दुनिया में सब नए। इसीलिए बाप कहते हैं- बाप को याद करो। कहते हैं- स्वर्ग को याद करो, अपने वर्से को याद करो और अपने घर को याद करो। ''अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।'' (मु.ता. 15.7.66 पृ.3 आदि) तो तीन को याद करें या एक को याद करें? (किसी ने कहा- एक को) वो एक कौन, जो हमारा शांति देवा, शांति का घर भी बन जाता है, जिस घर में 500-700 करोड़ मनुष्यात्माएँ सृष्टि-वृक्ष के ऊपर बैठे हुए में उसकी याद में समा जाती हैं, तो घर हुआ ना! घर भी हुआ, बाप को याद करो, वो मनुष्य-सृष्टि का बाप भी है और स्वर्ग को याद करो, वो 'स्व' की स्थिति में 'ग'-गया। 'स्व' माने आत्मिक स्थिति में गया; तो स्वर्ग में गया या नर्क में गया? (किसी ने कहा- स्वर्ग में) तो वो हमारा स्वर्ग भी है। कौन है हमारा स्वर्ग, कौन है हमारा घर, कौन है हमारा बाप? (किसी ने कहा- शांति देवा) शांतिदेवा कौन? (किसी ने कुछ कहा-...) अरे! फिर भूल गए। वो ही अव्यक्तमूर्ति, जो अव्यक्त भी है आँखों से, नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव दिखाई नहीं देते; लेकिन है तो नाक, आँख, कान वाला और अव्यक्त भी है और साकार भी है; क्योंकि बड़ा रूप है, उसमें सारी दुनियाँ समा जाती है; इसलिए गीता में लिखा है- उस अव्यक्तमूर्ति से सारी दुनियाँ निकलती है और सृष्टि के अंतकाल में सारे ही प्राणी उसमें समा जाते हैं। फिर क्या बचता है? नई दुनिया में सब नए-2 रह जावेंगे, भई पुराने सब भाग गए। तो बताओ, नई दुनिया में नए-ते-नया कौन और उसके बाद आने वाली पुराने-ते-पुराने कहाँ से शुरू होते हैं? कौन आत्मा है, जो इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पुराने-ते-पुरानी है? (किसी ने कहा- शंकर) पहले पत्ते का भी बाप, जो नर से डायरैक्ट नारायण बनता है और उसके बाद जो भी आते हैं, चाहे जन्म देने वाली आत्माएँ हों, चाहे कृष्ण के समान जन्म लेने वाली आत्माएँ हों, वो सब पुरानी मानी जाएँगी। तो नई दुनिया में सब नए, भई पुराने सब भाग गए। तो ऐसे भी नहीं कहेंगे कि नहीं, सूक्ष्मवतन को 50 वर्ष दें। नहीं, 100 वर्ष लग जाना होगा। ब्रह्मा बाबा ने 1969 में शरीर छोड़ा, उसमें 50 वर्ष एड किए तो कौन-सा सन् आया? 2018। सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा का सूक्ष्म शरीर खलास हो गया, देह का भान उनका खलास हो गया; आत्मिक स्थिति में मनुष्य-सृष्टि के बाप समान वो बच्चा अपने स्वरूप में स्थिर हो गया, बाप को पहचान लिया- इस मनुष्य-सृष्टि में हमारा बाप कौन? हमको जन्म देने वाला जन्मदाता कौन? तो बाप को जब जान जाएगा, पहचान जाएगा, तो जैसे बाप-टीचर-सद्गुरु चलाना चाहेगा, वैसे चलेगा। 2018 से पहले अपने सूक्ष्म शरीर के सूक्ष्म देहभान के आधार पर चलता है। सूक्ष्म शरीर में देहभान ज़्यादा होता है या स्थूल शरीर में देहभान ज़्यादा होता है? (किसी ने कहा- सूक्ष्म शरीर में) भूत-प्रेतों में, जो सूक्ष्म शरीरधारी होते हैं, उनमें देहभान ज़्यादा होता है। आत्मा जितनी सूक्ष्म होगी, उतनी ज़्यादा पावरफुल होगी। तो जो भूत-प्रेत होते हैं, वो बहुत पावरफुल आत्माएँ होती हैं। जब तक ब्रह्मा में वो सूक्ष्म देहभान है, तो वो 50 वर्ष का देहभान है; इसलिए मुरली में बाबा ने बोला- कोई ऐसी भी आत्मा होगी, जो 50 वर्ष संगम में सूक्ष्म शरीर में रहेगी। उसके बाद एक ही शरीर है, जिस शरीर में वो प्रवेश करता है। कौन? जिसके लिए मुरली/अव्यक्त वाणी में बोला- बाप का जन्म और बच्चे का जन्म इकट्ठा है। ''बाप और दादा दोनों कम्बाइंड हैं। दो बच्चे इकट्ठे जन्मते हैं ना। दो का पार्ट इकट्ठा।'' (मु॰15.6.72 पृ॰3 मध्य) सभी ब्राह्मण नंबरवार जानने लगेंगे कि वो मनुष्य-सृष्टि का बाप कौन है, पहले पत्ते का भी बाप कौन है और वो पहला पत्ता कौन है और किस साकार शरीर में पार्ट बजाय रहा है। ओम् शांति।